आर्टस् अँड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा

आध्यापक का नाम- विश्वास निवृत्ती पाटील

बी ए भाग -3

साहित्यशास्त्र

रस

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनन्द'। काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहा जाता है।

- पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित स्थायीभाव ही विभावादि से संयुक्त होकर रस के रूप में परिणत हो जाता है।
- रस को 'काव्य की आत्मा' या 'प्राण तत्व' माना जाता है।

रस के प्रकार

क्रमांक	रस का प्रकार
1.	शृंगार रस
2.	हास्य रस
3.	करुण रस
4.	रौद्र रस
5.	वीर रस
6.	भयानक रस
7.	वीभत्स रस
8.	अद्भुत रस
9.	शांत रस

1. शृंगार रस

- **शृंगार रस** को रसराज या रसपति कहा गया है। मुख्यत: संयोग तथा विप्रलंभ या वियोग के नाम से दो भागों में विभाजित किया जाता है, किंतु धनंजय आदि कुछ विद्वान् विप्रलंभ के पूर्वानुराग भेद को संयोग-विप्रलंभ-विरहित पूर्वावस्था मानकर अयोग की संज्ञा देते हैं तथा शेष विप्रयोग तथा संभोग नाम से दो भेद और करते हैं। संयोग की अनेक परिस्थितियों के आधार पर उसे अगणेय मानकर उसे केवल आश्रय भेद से नायकारब्ध, नायिकारब्ध अथवा उभयारब्ध, प्रकाशन के विचार से प्रच्छन्न तथा प्रकाश या स्पष्ट और गुप्त तथा प्रकाशनप्रकार के विचार से संक्षिप्त, संकीर्ण, संपन्नतर तथा समृद्धिमान नामक भेद किए जाते हैं तथा विप्रलंभ के पूर्वानुराग या अभिलाषहेतुक, मान या ईश्र्याहेतुक, प्रवास, विरह तथा करुण प्रिलंभ नामक भेद किए गए हैं। शृंगार रस के अंतर्गत नायिकालंकार, ऋतु तथा प्रकृति का भी वर्णन किया जाता है।

उदाहरण

- संयोग शृंगार

बतरस लालच लाल की, मुरली धरि लुकाय।
सौंह करे, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाय।

-बिहारी लाल

- वियोग शृंगार (विप्रलंभ शृंगार)

निसिदिन बरसत नयन हमारे,
सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे॥

-सूरदास

शृंगार रस

2.हास्य रस

- भारतीय काव्याचार्यों ने रसों की संख्या प्राय: नौ ही मानी है जिनमें से **हास्य रस** प्रमुख रस है।
- जैसे जिह्वा के आस्वाद के छह रस प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार हृदय के आस्वाद के नौ रस प्रसिद्ध हैं। जिह्वा के आस्वाद को लौकिक आनंद की कोटि में रखा गया है क्योंकि उसका सीधा संबंध लौकिक वस्तुओं से है। हृदय के आस्वाद को अलौकिक आनंद की कोटि में माना जाता है क्योंकि उसका सीधा संबंध वस्तुओं से नहीं किंतु भावानुभूतियों से है। भावानुभूति और भावानुभूति के आस्वादे में अंतर है।

उदाहरण

- तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप, साज मिले पंद्रह मिनट घंटा भर आलाप।
  घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता, धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता। (काका हाथरसी)

हास्य रस

3. करुण रस

- भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित आठ नाट्यरसों में शृंगार और हास्य के अनन्तर तथा रौद्र से पूर्व करुण रस की गणना की गई है। 'रौद्रात्तु करुणो रस:' कहकर 'करुण रस' की उत्पत्ति 'रौद्र रस' से मानी गई है और उसका वर्ण कपोत के सदृश है तथा देवता यमराज बताये गये हैं भरत ने ही करुण रस का विशेष विवरण देते हुए उसके स्थायी भाव का नाम 'शोक' दिया है। और उसकी उत्पत्ति शापजन्य क्लेश विनिपात, इष्टजन-विप्रयोग, विभव नाश, वध, बन्धन, विद्रव अर्थात पलायन, अपघात, व्यसन अर्थात आपत्ति आदि विभावों के संयोग से स्वीकार की है। साथ ही करुण रस के अभिनय में अश्रुपातन, परिदेवन अर्थात् विलाप, मुखशोषण, वैवर्ण्य, त्रस्तागात्रता, नि:श्वास, स्मृतिविलोप आदि अनुभावों के प्रयोग का निर्देश भी कहा गया है। फिर निर्वेद, ग्लानि, चिन्ता, औत्सुक्य, आवेग, मोह, श्रम, भय, विषाद, दैन्य, व्याधि, जड़ता, उन्माद, अपस्मार, त्रास, आलस्य, मरण, स्तम्भ, वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु, स्वरभेद आदि की व्यभिचारी या संचारी भाव के रूप में परिगणित किया है ।

उदाहरण

- सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥
  करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परिहिं भूमि तल बारहिं बारा॥(तुलसीदास)

4. वीर रस

श्रृंगार के साथ स्पर्धा करने वाला वीर रस है। श्रृंगार, रौद्र तथा वीभत्स के साथ वीर को भी भरत मुनि ने मूल रसों में परिगणित किया है। वीर रस से ही अदभुत रस की उत्पत्ति बतलाई गई है। वीर रस का 'वर्ण' 'स्वर्ण' अथवा 'गौर' तथा देवता इन्द्र कहे गये हैं। यह उत्तम प्रकृति वालों से सम्बद्ध है तथा इसका स्थायी भाव 'उत्साह' है - 'अथ वीरो नाम उत्तमप्रकृतिरुत्साहत्मक:'। भानुदत्त के अनुसार, पूर्णतया परिस्फुट 'उत्साह' अथवा सम्पूर्ण इन्द्रियों का प्रहर्ष या उत्फुल्लता वीर रस है - 'परिपूर्ण उत्साह: सर्वेन्द्रियाणां प्रहर्षो वा वीर:।'

हिन्दी के आचार्य सोमनाथ ने वीर रस की परिभाषा की है -

'जब कवित्त में सुनत ही व्यंग्य होय उत्साह। तहाँ वीर रस समझियो चौबिधि के कविनाह।' सामान्यत: रौद्र एवं वीर रसों की पहचान में कठिनाई होती है। इसका कारण यह है कि दोनों के उपादान बहुधा एक - दूसरे से मिलते-जुलते हैं। दोनों के आलम्बन शत्रु तथा उद्दीपन उनकी चेष्टाएँ हैं। दोनों के व्यभिचारियों तथा अनुभावों में भी सादृश्य है। कभी-कभी रौद्रता में वीरत्व तथा वीरता में रौद्रवत का आभास मिलता है। इन कारणों से कुछ विद्वान रौद्र का अन्तर्भाव वीर में और कुछ वीर का अन्तर्भाव रौद्र में करने के अनुमोदक हैं, लेकिन रौद्र रस के स्थायी भाव क्रोध तथा वीर रस के स्थायी भाव उत्साह में अन्तर स्पष्ट है।

उदाहरण

- वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
  सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो।
  तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं॥

(द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी)

वीर रस

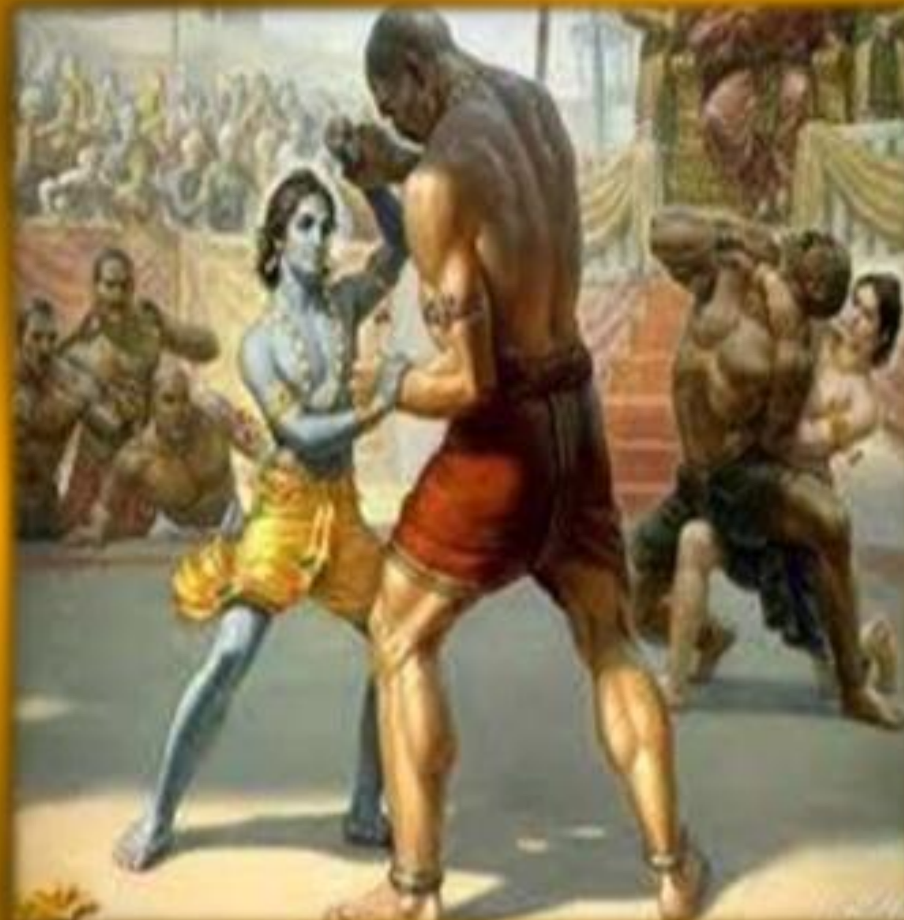

5. रौद्र रस

काव्यगत रसों में रौद्र रस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में शृंगार, रौद्र, वीर तथा वीभत्स, इन चार रसों को ही प्रधान माना है, अत: इन्हीं से अन्य रसों की उत्पत्ति बतायी है, यथा- 'तेषामुत्पत्तिहेतवच्क्षत्वारो रसा: शृंगारो रौद्रो वीरो वीभत्स इति' । रौद्र से करुण रस की उत्पत्ति बताते हुए भरत कहते हैं कि 'रौद्रस्यैव च यत्कर्म स शेय: करुणो रस:' ।रौद्र रस का कर्म ही करुण रस का जनक होता है।

उदाहरण

- श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगें।
  सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥
  संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
  करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥
- (मैथिलीशरण गुप्त)

6.भयानक रस

भयानक रस हिन्दी काव्य में मान्य नौ रसों में से एक है। भानुदत्त के अनुसार, 'भय का परिपोष' अथवा 'सम्पूर्ण इन्द्रियों का विक्षोभ' भयानक रस है। अर्थात भयोत्पादक वस्तुओं के दर्शन या श्रवण से अथवा शत्रु इत्यादि के विद्रोहपूर्ण आचरण से है, तब वहाँ भयानक रस होता है। हिन्दी के आचार्य सोमनाथ ने 'रसपीयूषनिधि' में भयानक रस की निम्न परिभाषा दी है-

'सुनि कवित्त में व्यंगि भय जब ही परगट होय। तहीं भयानक रस बरनि कहै सबै कवि लोय'।

उदाहरण

- उधर गरजती सिंधु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी।

  चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाये व्यालों - सी॥

(जयशंकर प्रसाद)

भयानक रस

भयानक रस
भय भयानक रस का स्थायी-भाव है। भय उत्पन्न करने वाले जीव, व्यक्ति आदि आलम्बन विभाव, उनकी चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव, विवर्णता, गद्गद भाषण (भय के कारण अस्पष्ट स्वर), प्रलय (मूर्च्छा), पसीना आना, रोंगटे खड़े होना, शरीर का काँपना, इधर-उधर भागना आदि अनुभाव हैं।

7. बीभत्स रस

बीभत्स रस काव्य में मान्य नव रसों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी स्थिति दु:खात्मक रसों में मानी जाती है। इस दृष्टि से करुण, भयानक तथा रौद्र, ये तीन रस इसके सहयोगी या सहचर सिद्ध होते हैं। शान्त रस से भी इसकी निकटता मान्य है, क्योंकि बहुधा बीभत्सता का दर्शन वैराग्य की प्रेरणा देता है और अन्तत: शान्त रस के स्थायी भाव शम का पोषण करता है।

उदाहरण

- सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।
  खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत॥
  गीध जांघि को खोदि-खोदि कै माँस उपारत।
  स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत॥

(भारतेन्दु)

बीभत्स रस

४. अद्भुत रस

अदभुत रस 'विस्मयस्य सम्यक्समृद्धिरद्भुत: सर्वेन्द्रियाणां ताटस्थ्यं या'। अर्थात विस्मय की सम्यक समृद्धि अथवा सम्पूर्ण इन्द्रियों की तटस्थता अदभुत रस है। कहने का अभिप्राय यह है कि जब किसी रचना में विस्मय 'स्थायी भाव' इस प्रकार पूर्णतया प्रस्फुट हो कि सम्पूर्ण इन्द्रियाँ उससे अभिभावित होकर निश्चेष्ट बन जाएँ, तब वहाँ अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण

- अखिल भुवन चर- अचर सब, हरि मुख में लखि मातु।

  चकित भई गद्गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु॥

(सेनापति)

अद्भुत रस

9. शांत रस

शान्त रस साहित्य में प्रसिद्ध नौ रसों में अन्तिम रस माना जाता है - "शान्तोऽपि नवमो रस:।" इसका कारण यह है कि भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में, जो रस विवेचन का आदि स्रोत है, नाट्य रसों के रूप में केवल आठ रसों का ही वर्णन मिलता है। शान्त के उस रूप में भरतमुनि ने मान्यता प्रदान नहीं की, जिस रूप में शृंगार, वीर आदि रसों की, और न उसके विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का ही वैसा स्पष्ट निरूपण किया।

उदाहरण

- मन रे तन कागद का पुतला।

  लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना॥
(कबीर)

शांत रस

शांत रस का
उदाहरण:-
मेरा मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

THANK
YOU
BY :